हम हुसैन की हत्या के दिन मातम क्यों नहीं करते?

[**हिन्दी** – Hindi – هندي]

माजिद बिन अब्दुर्रहमान अल-फुरैयान

अनुवादः **अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह**

2014 - 1436

IslamHouse.com

﴿لماذا لا نجعل يوم مقتل الحسين مأتماً؟﴾

« باللغة الهندية »

ماجد بن عبد الرحمن الفريان

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2014 - 1436

IslamHouse.com

بِسۡمِ ٱللَّهِ ٱلرَّحۡمَٰنِ ٱلرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) केवल अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत प्रदान कर दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

हम हुसैन की हत्या के दिन मातम क्यों नहीं करते?

हम अल्लाह के महीने मुहर्रम में प्रवेश करते हुए, अल्लाह के दिनों में से एक ऐसे दिन का अभिनंदन करते हैं, जिसके बारे में लोगों ने मतभेद किया है, और वह मुहर्रम के महीने का दसवाँ दिन है। इसके अंदर दो प्रभवाशाली घटनाएँ घटीं हैं जिनके कारण लोगों ने इस दिन के कार्यों के बारे में मतभेद किया है :

पहली घटना : मूसा अलैहिस्सलाम और उनकी क़ौम की मुक्ति, तथा फिरऔन और उसकी सेना का विनाश।

बुखारी और मुस्लिम ने अपनी सहीह में इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत किया है – और शब्द मुस्लिम के हैं – कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मदीना तश्रीफ लाए तो आप ने यहूद को आशूरा के दिन रोज़ा रखते हुए पाया, तो उनसे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा : "यह कौन सा दिन है जिसका तुम लोग रोज़ा रखते हो?" तो उन्हों ने कहा : यह एक ऐसा दिन है जिसमें अल्लाह ने मूसा और उनकी क़ौम को मुक्ति प्रदान की और

फिरऔन और उसकी क़ौम को पानी में डिबो दिया, इसपर मूसा अलैहिस्सलाम ने शुक्र के तौर पर रोज़ा रखा, अतः हम भी रोज़ा रखते हैं। तो अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''हम मूसा के तुम से अधिक हक़दार और योग्य हैं।'' चुनांचे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं रोज़ा रखा और उसके रोज़ा रखने का आदेश दिया।''(1)

दूसरी घटना : नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नवासे हुसैन बिन अली बिन अबी तालिब की हत्या, यह घटना जुमा के दिन सन् 61 हिजरी में कर्बला की धरती पर घटी, उस समय उनकी आयु

---

[1] बुखारी 2/704, हदीस संख्या : 1900, मुस्लिम 2/796, हदीस संख्या : 1130.

58 वर्ष थी।[1] यह उम्मत पर भारी मुसीबतों में से था, इब्ने तैमिय्या रहिमहुल्लाह कहते हैं : ''आप रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या भारी आपदाओं में से थी, क्योंकि हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु और उनसे पहले उसमान रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या इस उम्मत में फित्नों के सबसे बड़े कारणों में से थे, और उन दोनों के हत्यारे अल्लाह के निकट सबसे दुष्ट लोगों में से हैं।''[2]

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मूसा अलैहिस्सलाम के नजात और फिरऔन के विनाश

---

[1] अल–बिदाया वन्निहाया 11/569.

[2] मजमूउल फतावा 3/411.

पर अल्लाह के प्रति आभार प्रकट करने के तौर पर, इस दिन रोज़ा रखने का निर्देश दिया है। उसके रोज़े का हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या से कोई संबंध नहीं है।

इस दिन के बारे में बहुत से आसार वर्णित हैं, किन्तु उसकी व्यावहारिक विशेषता रोज़े के अन्दर सीमित है, और इस बारे में यह मध्यस्थ व्यावहार है।[1]

आशूरा के दिन के विषय में दो फ़िर्क़े (दल) पथ–भ्रष्ट हो गए :

[1] मजमूउल फतावा 3/411.

पहला दल : नासिबियों का है, ये लोग आशूरा के दिन खुश होते हैं और जश्न मनाते हैं, और अहले सुन्नत में से उन लोगों ने गलती की है जिन्हों ने स्नान करने, सुर्मा लगाने और खिज़ाब लगाने आदि के बारे में मनगढ़न्त हदीसें रिवायत की हैं या उनके लिए रिवायत की गई हैं, जो खुशी और हर्ष व उल्लास के रूपों में से समझे जाते हैं, इसके द्वारा वे उन लोगों के प्रतीकों का विरोध करते हैं जो इसे मातम का दिन बनाते हैं। इस तरह उन्हों ने एक बालित, असत्य चीज़ का विरोध एक बातिल चीज़ के द्वारा किया है, और एक बिदअत का खण्डन एक दूसरी बिदअत से किया है, जैसाकि शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या

रहिमहुल्लाह ने इसे स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है। [1]

दूसरा दल : शिया लोगों के कुछ समूह हैं, ये लोग उसे मातम (शोक) का अवसर मानते हैं जिसमें गाल पीटते हैं, गरीबान फाड़ते हैं, और जाहिलियत के समय काल की तरह बातें करते हैं। उनका मामला यहाँ तक पहुँच जाता है कि वे अपने आपको सख्त मार मारते हैं, बल्कि कुछ लोग तलवार आदि से अपने सिर को घायल कर लेते हैं यहाँ तक कि उनके खून बहने लगते हैं। उनका दावा यह होता है कि वे ऐसा हुसैन

---

[1] अल–फतावा 4/513.

रज़ियल्लाहु अन्हु के ऊपर शोक व गम प्रकट करते हुए करते हैं, और यह कि वे लोग उनसे प्यार करने वाले उनके श्रद्धावान हैं, और सेटल लाइट चैनलस उसे इस तरह ब्रोडकास्ट करते हैं कि गोया यही लोग आल बैत से प्यार करने वाले हैं, और दूसरे लोग जो इनकी तरह काम नहीं करते हैं, वे आल बैत से महब्बत करने वाले नहीं हैं। हालंकि यह बात सही नहीं है। क्योंकि अहले सुन्नत, आले बैत के सबसे अधिक योग्य हैं। और वही वास्तव में उनसे महब्बत करने वाले हैं, लेकिन वे इस बारे में अल्लाह की शरीअत का ध्यान रखते हैं। उनके अपने आपको मारने का वास्तविक कारण जिसकी राफिज़ा (शिया लोग) घोषणा नहीं करते हैं वह यह है कि उन्हों ने

हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ उस समय विश्वासघात किया और उन्हें असहाय छोड़ दिया जब वह उनके पास कूफा तशरीफ लाए।[1] तथा इसी तरह उन्हों ने इससे पहले उनके चचेरे भाई मुस्लिम बिन अक़ील बिन अबी तालिब के साथ विश्वासघात किया और उन्हें असहाय छोड़ दिया यहाँ तक कि इब्ने ज़ियाद ने उन्हें क़त्ल कर दिया।[2] अतः वे इस दिन उन पर शोक प्रकट करते हुए, तथा उनके साथ अपनी कमी व कोताही के लिए अपने आपको दंडित करते हैं।

हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के प्रति रवैया :

---

[1] अल–बिदाया वन्निहाया 11/530–532.

[2] अल–बिदाया वन्निहाया 11/484–488.

हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु की हत्या इस्लामी उम्मत पर बीतने वाले सबसे महान संकटों व आपदाओं में से है, जिसकी वजह से मुसलमान दु:खी होते हैं। लेकिन वे केवल वही काम करते हैं जो अल्लाह ने धर्मसंगत बनाया है, और अल्लाह तआला ने मुसीबत के समय इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ना धर्म संगत करार दिया है। अल्लाह तआला ने फरमाया :

﴿وَبَشِّرِ الصَّابِرِينَ ﴿١٥٥﴾ الَّذِينَ إِذَا أَصَابَتْهُم مُّصِيبَةٌ قَالُوا إِنَّا لِلَّـهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ ﴿١٥٦﴾ أُولَـٰئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَاتٌ مِّن

رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ ۖ وَأُولَـٰئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُونَ ﴿١٥٧﴾ (البقرة:١٥٥-
١٥٧)

"और सब्र करने वालों को ख़ुशख़बरी दे दीजिए, कि जब उन पर कभी भी कोई मुसीबत आती है, तो वह बोल उठते हैं कि हम तो ख़ुद अल्लाह के लिए हैं और हम उसी की ओर लौट कर जाने वाले हैं। उन्हीं लोगों पर उनके परवरदिगार की तरफ से रहमत और इनायतें हैं और यही लोग हिदायत याफ्ता (सच्चे रास्ते पर) हैं।" (सूरतुल बक़राः १५५-१५७)

तथा सहीह मुस्लिम में नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वर्णित है कि आप ने फरमाया : ‘‘जिस मुसलमान को भी कोई मुसीबत पहुंचती है तो वह :

"إنا لله وإنا إليه راجعون، اللّٰهُمَّ أجرني في مصيبتي وأخلف لي خيرا منها."

‘‘इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन, अल्लाहुम्मअ–जुरनी फी मुसीबती व अख़लिफ ली खैरन मिन्हा’’ (अर्थात निःसन्देह हम अल्लाह ही के लिए हैं और उसी की ओर लौटने वाले हैं। ऐ अल्लाह! मुझे मेरी विपत्ति में अज्र व सवाब दे और मुझे उससे बेहतर बदला प्रदान कर।).

कहता है तो अल्लाह उसे उसकी मुसीबत में अज्र व सवाब प्रदान करता है, और उसे उससे बेहतर बदला देता है।''[1]

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिय्या रहिमहुल्लाह ने फरमाया : ''यहाँ सबसे अच्छी उल्लेखनीय बात यह है कि : इमाम अहमद [2], तथा इब्ने माजा[3] ने फातिमा बिन्त अल–हुसैन से उनके बाप अल–हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के माध्यम से

---

[1] सहीह मुस्लिम 2/631, हदीस संख्या : 918.

[2] (1/201, हदीस संख्या : 1734) शैख शुएब अरनाऊत ने कहा है : इसकी इसनाद बहुत ज़ईफ है।

[3] (1/509, हदीस संख्या : 1598), लेकिन यह एक दूसरे तरीक़ से है।

रिवायत किया है कि उन्हों ने कहा : अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जो भी मुसलमान किसी मुसीबत से दोचार होता है, तो वह अपनी मुसीबत को याद करता है अगरचे वह पुरानी हो चुकी हो, चुनाँचे उस समय वह ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'' पढ़ता है, तो अल्लाह उसके लिए उस दिन के समान (अज्र व सवाब) लिखता है जिस दिन उसे मुसीबत पहुँची थी।'' इस हदीस को हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से उनकी बेटी फातिमा ने रिवायत किया है जो उनकी शहादत के समय उपस्थित थीं। अल्लाह को यह बात मालूम थी कि हुसैन के साथ घटने वाली आपदा को लंबा समय बीतने के बाद भी याद किया जायेगा, तो इस्लाम

की अच्छाइयं में सें यह बात थी कि स्वयं उन्हों ने ही नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस सुन्नत को लोगों तक पहुँचाया। और वह यह कि जब भी इस मुसीबत को याद किया जाये तो ''इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन'' पढ़ा जाये तो इन्सान को उसी तरह सवाब मिलेगा जिस तरह कि उस दिन मिला था जिस दिन मुसलमानों पर वह मुसीबत आई थी। (1)

इसी तरह आजकल कुछ संप्रदायों का गालों को पीटना, गरीबानों को फाड़ना और अपने अपको यातना देना बिना किसी सन्देह के एक हराम और वर्जित काम है, वैध महब्बत और प्यार से उसका

---

[1] अल–फतावा 4 / 511–512.

कोई लेना–देना नहीं है। इब्ने रजब रहिमहुल्लाह कहते हैं : ''जहाँ तक उसे मातम (शोक) का अवसर बनाने का संबंध है, जैसाकि राफिज़ा लोग उसके अंदर हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा के क़त्ल किए जाने की वजह से करते हैं, तो वह उन लोगों के कामों में से है जिसकी सांसारिक जीवन की कोशिश बेकार हो गई जबकि वह यह समझता रहा कि वह बहुत अच्छा काम कर रहा है। जब अल्लाह तथा उसके रसूल ने पैगंबरों और ईश्दूतों की आपदाओं व संकटों और उनकी मत्यु के दिनों को मातम के दिन बनाने का आदेश नहीं

दिया है तो फिर उनसे कमतर लोगों के बारे में यह कैसे संभव है।''[1]

उन्हें नहीं पता कि अली बिन अल–हुसैन, या उनके बेटे मुहम्मद, या उनके बेटे जाफर, या मूसा बिन जाफर रज़ियल्लाहु अन्हुम के बारे में या उनके अलावा अन्य मार्गदर्शन के इमामों के बारे में कुछ भी नहीं जाना जाता कि उन्हों ने गाल पीटे, या गरीबान फाड़े या चींख पुकार किए। उनके बाप अली रज़ियल्लाहु अन्हु उनसे बेहतर थे, वह जुमा के दिन सत्रह रमज़ान सन चालीस हिज्री में फज्र की नमाज़ के लिए जाते हुए क़त्ल कर दिए गए, लेकिन राफिज़ा ने उसे मातम का दिन नहीं

---

[1] लतायफुल मआरिफ (113).

बनाय। इसी तरह उसमान बिन अफ़फ़ान रज़ियल्लाहु अन्हु अहले सुन्नत वल जमाअत के निकट अली रज़ियल्लाहु अन्हु से बेहतर थे, उन्हें सन छत्तीस हिज्री जुलहिज्जा के महीने के तशरीक़ के दिनों में उनके घर का घेराव करके क़त्ल कर दिया गा, उनके शहे रग को एक तरफ से दूसरे तरफ तक काट कर ज़बह कर दिया गया, पर लोगों ने उनकी हत्या के दिन को मातम नहीं बनाया, इसी तरह फारूक़ उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु जो कि उसमान और अली से अफज़ल (बेहतर) हैं, उन्हें मेहराब में फज्र की नमज़ पढ़ते हुए और कुरआन की तिलावत करते हुए क़त्ल कर दिया गया, लेकिन लोगों ने उनके क़त्ल के दिन को मातम नहीं बनाया, जिस तरह

कि ये लोग हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के क़त्ल के दिन में करते हैं।

फिर यह बात भी है कि गाल पीटना, गरीबान फाड़ना, और आत्म यातना वर्जित चीज़ें हैं जो जायज़ नहीं हैं, सहीहैन (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम) में अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने कहा : अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''जो व्यक्ति (मुसीबत के समय) गालों को थप्पड़ मारे, गरीबानों को फाड़े और जाहिलियत

(अज्ञानता काल) की पुकार लगाए वह हम में से नहीं है।''[1]

तथा सहीहैन (सहीह बुखारी व सहीह मुस्लिम) में अबू मूसा अल–अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि उन्हों ने कहा : ''मैं उस चीज़ से बरी और अलग–थलग हूँ जिससे अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बरी और अलग–थलग होने की घोषणा की है, अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (मुसीबत के समय) चिल्लाकर रोने वाली, सिर मुँडवाने वाली और गरीबान फाड़ने वाली औरतों से

---

[1] बुखारी 1/435, हदीस संख्या : 1232, मुस्लिम 1/99, हदीस संख्या : 103.

अलगाव और संबंध–विच्छेद की घोषणा की है।'' (1)

तथा सहीह मुस्लिम में अबू मालिक अल–अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि : ''अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''मेरी उम्मत में चार चीज़ें जाहिलियत के कामों में से हैं जिन्हें वे नहीं छोड़ेंगे : अपने वंश पर गर्व करना, दूसरों के वंश में दोष लगाना, तारों से वर्षा मागंना और मरे हुए पर नौहा व मातम करना (रोना–धोना)'' तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : ''नौहा करनेवाली औरत यदि

---

[1] बुखारी 1/436, हदीस संख्या : 1234, मुस्लिम 1/100, हदीस संख्या : 104

अपनी मृत्यु से पहले तौबा नहीं की तो क़ियामत के दिन उसे इस हालत में उठाया जायेगा कि उसके ऊपर कोलतार का पोशाक और खुजली की ओढ़नी होगी।'' [1]

शैखुल इस्लाम इब्ने तैमिया ने फरमाया : ''इसके बारे में कई हदीसें वर्णित हैं, तो भला बतलाओ उस समय क्या हुक्म होगा अगर उसके साथ मोमिनों पर अत्याचार करना, उन पर धिक्कार करना, उन्हें बुरा भला कहना, तथा मतभेद और अधर्म वाले लोगों का उस चीज़ पर सहयोग करना जिसका वे धर्म को बिगाड़ने के लिए करते

---

[1] सहीह मुस्लिम 2/644, हदीस संख्या : 934.

हैं और इसके अलावा अन्य चीज़ें शामिल हो जाएं जिन्हे अल्लाह ही शुमार कर सकता है।

ऐ अल्लाह तू अपने नबी के साथियों (सहाबा) से खुश हो जा और उन्हें खुश कर दे। ऐ अल्लाह तू हमें उन लोगों में से बना जो उनसे दोस्ती व वफादारी रखते हैं। और हमें उनके साथ बागों और नहरों में प्रभुत्वशाली बादशाह के पास प्रतिष्ठित स्थान पर एकत्र कर।

अल्लाह तआला मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, उनके पीरवार, उनकी पत्नियों और उनकी संतान पर दया अवतरित करे।